रिकॉर्ड :– धीरज धर मनवा धीरज धर..... ॐ पिताश्री 23/6/64

ओम् शांति। मनुष्य जब बीमार होते हैं तो सर्जन धैर्य देते हैं छूटने लिए। वह तो है जिस्मानी बीमारी। अब तुम बच्चों को पता पड़ा है यह है रूहानी। रूह को ही रोग लगा है; इसलिए रूह को ज्ञान के इंजेक्शन लग रहे हैं। आत्मा को ही ज्ञान इंजेक्शन लगता है, न कि शरीर को। कोई सूई व दवाई आदि नहीं है, यह एक इंजेक्शन काफी है। कौन–सा इंजेक्शन? मनमनाभव, अशरीरी भव। यह है इंजेक्शन। देही–अभिमानी हो रहने से बच्चों का पवित्रता, सुख–शांति का वर्सा जमा होता रहेगा, जितना–2 देही–अभिमानी बन बाप को याद करते रहेंगे। बच्चे जानते हैं आधा कल्प के दुख दूर करने वाला बाबा आया हुआ है। हर–2 महादेव कहते हैं न! अब वह महादेव तो नहीं है। दुख तो बाप ही हरेंगे। दुख हर कर, सुख देने वाला बाप है। बच्चे जानते हैं, बरोबर आधा कल्प से कुछ न कुछ हम दुख देते आए हैं। अब बीमारी बढ़ गई है, पाँच विकारों ने बहुत दुखी किया है; इसलिए बाप कहते हैं यह जो कल्प का खाता है, इनको अब ठीक करो। व्यापारी लोग 12 मास का खाता माइनस और प्लस का रखते हैं न। नौकरी वाले माइनस और प्लस को नहीं जानते। ऊँच ते ऊँच व्यापार होता है जवाहरात का। यह भी है ज्ञान रत्न। व्यापारी लोग जानते हैं, हमारी कमाई होती है या कहाँ नुकसान होता है। कभी नुकसान, कभी फायदा, यह तो चलता ही है। बाप कहते हैं, तुम्हारा अब कल्प का खाता तो माइनस की तरफ चला गया है, अब फिर प्लस करना है। माइनस की तरफ क्यों गया है? क्योंकि तुम देह–अभिमानी बन पड़े। माया रावण ने खाता खराब कर दिया है। माया ने सबको घाटे में डाल दिया है; इसलिए कंगाल बन पड़े हैं। अभी तुम बच्चे कहते हो– बाबा, आप तो सत्य कहते हो, बरोबर माया ने बड़ा घाटा डाला है। घाटा होते–2 सब कौड़ी, तुच्छ बन पड़े हैं। कुबेर जैसे खज़ानी थे। अभी सत्य बाप हमको नर से नारायण बनने की मत दे रहे हैं, जिस श्रीमत से हम श्रेष्ठ बनेंगे और हमारा आधा कल्प के लिए जमा हो जाता है। यह एक ही बार खाता होता है। बाप कहते हैं, अच्छी रीत खाता जमा करना है। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पद पाना है तो देही–अभिमानी भव, बाप को याद करो। आत्मा ही पतित बनती है; इसलिए पापआत्मा, पुण्य आत्मा कहा जाता है। पाप शरीर नहीं कहा जाता है। पापआत्मा बनाती है माया रावण। बाप को याद ही नहीं करते तो पुण्य आत्मा कैसे बने! अशुद्ध अंहकार है नम्बरवन भूत। माया ने कितना घाटा डाला है। दुनिया में इस फायदे और घाटे का किसको पता नहीं है, यह बाप ही बतलाते हैं। श्रीमत भगवानुवाच्य, भगवान एक होता है, जो आकर राजयोग सिखलाते हैं। यह युग बहुत फायदे का है, मनुष्य को भर देते हैं। सिर्फ एक बात में निश्चय रहे और बाप को याद करते रहो, बस। यह तो जानते हो, धीरज रखा है बरोबर हमारी तकदीर जागी है। बाबा हमको पार ले जाने वाला है। इस वैश्यालय से शिवालय में ले जाने बाबा आया है। खिवैया तो एक ही है। पतित–पावन ही खिवैया ठहरा। होशियार तैरने वाले जो होते हैं वह बहुत युक्ति से तैरते हैं, सहज रीति तैराना सिखलाते हैं। तुम बच्चे भी जानते हो, बाबा कितना सहज हमको कलहयुग किनारे से सतयुग किनारे ले जा रहे हैं, बुद्धियोग अथवा याद द्वारा। यह आत्माओं से बात कर रहे हैं। बाप ही आए आत्माओं की ज्योत जगाते हैं। उनको शमा भी कहा जाता, ज्योति स्वरूप भी कहा जाता है। मनुष्य मरते हैं तो दीवा जगाए रखते हैं, उसमें घृत डालते रहते हैं। तुमको ज्ञान घृत आधा कल्प से लेकर, कहाँ से भी न मिलने कारण सबके दीवे बुझ गए हैं। बाकी थोड़ा जाकर रहा है। इस समय है घोर अंधियारा। सतयुग में होता है घोर सोझरा। अभी फिर से तुम आत्माओं के दीप जग रहे हैं, साथ–2 ज्ञान का तीसरा नेत्र भी तुमको मिल रहा है। पत्रों में भी बाप लिखते हैं– मीठे–2, सिकीलधे, लाडले बच्चे .....। बाप भी बहुत मीठा है न! तुमको टेस्ट आती है प्रैक्टिकल में कि

बाबा कितना मीठा, कितना प्यारा है। हमको भी कितना मीठा बनाते हैं। यह भी तुम जानते हो, हम ही कितने मीठे, कितने प्यारे थे, फिर हम ही पूज्य से पुजारी बने तो खुद को पूजते रहे। हम सो ल०ना० अथवा सूर्यवंशी थे, फिर हम सो शूद्रवंशी बने। शूद्रवंशी बनना यानी घाटा। अब फिर सूर्यवंशी बनते हैं अर्थात् फायदे में जाते हैं। इसलिए बाप को याद करना है और पढ़ना है। यह बड़ी वण्डरफुल बाते हैं। गाते भी हैं, जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली। हमें भी जनक मिसल ज्ञान चाहिए। जनक तो तुम सब हो न! घर के मालिक हो न! कोई बड़ा धनवान है, कोई कम धनवान है। जनक तो हो न! गरीब भी अपन को घर का मालिक समझेगा, साहुकार भी अपन को घर का मालिक समझेगा। तुम हर एक अपन को जनक समझो। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है। गरीब निवाज़ बाप को कहते हैं; क्योंकि सबसे गरीब भारतवासी ही बने हैं। अभी तो तुमको बिल्कुल बेगर बनने हैं। यह देह भी अपनी न समझो। एक कहानी है, कहा– लाठी भी न उठाओ। बाप कहते हैं, मुख्य है देह–अंहकार। इसको भूलो, एक बाप को याद करो। यह तो सब जानते हैं, मैं आत्मा हूँ, यह शरीर है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। पुनर्जन्म को सब मानते हैं। ज़रूर जिस युग में रहेंगे, पुनर्जन्म भी वहाँ ही मिलेगा। 84 जन्म हैं ना। यह चक्कर है। तुम बच्चों से ही आदि शुरू होती है, फिर नीचे आते हो। यह स्वदर्शन हुआ। तीसरा नेत्र भी तुमको मिला है। जितना बाप को याद करेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। जीवनमुक्त तो सभी देवी–देवताएँ हैं। पहले जीवनमुक्ति सब पाते हैं। पहले तो मुक्ति में जाना पड़े। तुम भी पहले मुक्ति, गति को पाते हो, फिर जीवनमुक्ति में आवेंगे। स्वर्ग में पहले–2 हम देवी–देवताएँ आवेंगे, जो धर्म प्रायःलोप हो गया है। अब बाप आशीर्वाद करते हैं– मीठे–2 बच्चे, सदा सुखी भव, सदा शांत भव, पवित्र भव, चिरंजीव भव अर्थात् बहुत जन्म जीओ। आशीर्वाद तो बाप से मिलती ही है; परन्तु फिर हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है कि हम चिरंजीव कैसे बनें। बाप को याद करने से ही तुम चिरंजीव बन रहे हो– यह आशीर्वाद बाप देते हैं। ब्राह्मण लोग भी कहते हैं– आयुष्मान भव। बाप भी कहते हैं, सदा जीते रहो बच्चे। तुम भी समझते हो, हम चिरंजीव बन रहे हैं। आधा कल्प के लिए कब काल नहीं खावेगा। सतयुग में मरने का नाम नहीं होता। यहाँ तो मनुष्य मरने से डरते हैं ना। तुम तो पुरुषार्थ कर रहे हो मरने के लिए– शरीर छोड़कर अपने बाप पास जावें, स्वर्गवासी बनें। निर्वाणधाम जाने लिए सिर्फ तुम पुरुषार्थ करते हो, सन्यासी कर न सके। वह न मुक्ति पाते हैं, न किसको देते हैं। तुम जानते हो, हम बाबा को याद करते–2 सब शरीर छोड़े देंगे। कोई कहते हैं, हम जल्द जावें– कब विनाश होगा, हम कब जावेंगे। अरे, तुम ऐसे मत कहो। हम कब जाएँगे, यह कहना अर्थात् आप वापिस कब जावेंगे, यह हिसाब हो गया। अभी तो तुम बाबा के साथ बैठे हो। तुम ईश्वर की संतान हो। तुम्हारा ही यादगार बना हुआ है। मोस्ट बिलवेड बाप के बच्चे बने हो तो तुमको भी बाबा जैसा बहुत मीठा, बहुत प्यारा बनना है और सबको बनाना है। टाइम तो लगता है। कोई बहुत तीखी दौड़ी पहनते हैं, कोई कम पहनते हैं कल्प पहले मुआफिक। कहेंगे, इस समय तक फलाने इतनी दौड़ी पहन फूल बने हैं, इतनी कली बने हैं। कोई तो कली बन, कली से फूल बन फिर काँटे बन पड़े हैं। माया का तूफान आया तो न कली, न फूल रहे, बड़े काँटे बन जाते हैं। बहुत अबलाओं पर अत्याचार होने लग पड़ते हैं। बाँध हो जाती हैं। बहुत नुकसान हो जाता है। वृंदावन की बात सुनाते हैं न कि अंदर डांस होता था..... है यह ज्ञान डांस की बात न। तुम बच्चे कहाँ–2 से आते हो ज्ञान डांस सीखने, तब बाबा कहते हैं– बादल हो, जो रिफ्रेश हो फिर ज्ञान डांस कर। बाप कहते हैं, बाकी थोड़े रोज़ हैं। यह तो बड़ा अच्छा समय है। जितना भी टाइम हो उतना अच्छा। हमारी अवस्था पक्की होती जावेगी। बाप रत्न देने आए हैं ना। अभी तो अजुन बहुत कुछ भी है। सबका जमा नहीं होता है। अभी तो अजुन समय पड़ा है। बहुत बड़ी राजधानी स्थापन होती है। यह तुम ही जानते हो कि इस

बाप को याद करने से राजधानी स्थापन करते हैं, बाप और खज़ाना याद रहता है। याद से ही हम अपना स्वराज स्थापन करते हैं। स्व आत्मा को अब राजाई नहीं है, गधाई है। अब फिर हम सो राजाओं का राजा बनेंगे– यह आत्मा को नशा रहता है। आत्मा इन ऑरगन्स द्वारा वर्णन करती है। आत्माओं को ही सब सृष्टि–चक्र का नॉलेज मिला है। बीज और झाड़ को जान गए हैं। बाबा कहते हैं, हम–तुम कल्प आगे भी थे, अब हैं, फिर कल्प बाद होंगे। सारे कल्पवृक्ष को जानते हैं। पहले–2 बाप की पहचान देनी है। यह सब आत्माओं का निराकारी बाप है। पहले–2 ब्राह्मणों को रचते हैं। शूद्र वर्ण को ब्राह्मण वर्ण बनाते हैं। यह है टॉप मोस्ट सिजरा। ब्राह्मण से देवता, फिर क्षत्रिय, फिर इस्लामी–बौद्धी..... आदि सब निकलते हैं। यह है ग्रेट–2 ग्रैंड फादर। जिस्मानी बाप है ऊँच ते ऊँच ब्रह्मा। रूहानी बाप है शिवबाबा। मूलवतन, सूक्ष्मवतन और स्थूलवतन। ब्रह्मा द्वारा यह ब्राह्मण पैदा हुए, फिर यह देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। नटशेल में सारा बुद्धि में है। शरीर निर्वाह भी करना है; क्योंकि तुम कर्मयोगी हो। नौकरी–धंधा आदि करने लिए 8 घण्टे तो उनको फ्री है। वह तो करना ही है। गवर्मेन्ट की नौकरी 8 घण्टा होती है। चीफ जस्टिस होता है गवर्मेन्ट का; परन्तु वह तो पूरी जजमेंट नहीं देते। यह पाण्डव गवर्मेन्ट भी है तो फिर धर्मराज भी है। बच्चों को समझाया जाता है अच्छी रीति बाबा की सर्विस में न रहे, देही–अभिमानी न बने और कोई उल्टा काम कर लिया तो उनपर दण्ड बहुत पड़ जाता। यह हाईएस्ट गवर्मेन्ट भी है, हाईएस्ट सुप्रीम जज भी है। कोई गफलत की तो ट्रिब्युनल बैठेगी, खास तुम बच्चों के लिए। गवर्मेन्ट पास भी जजमेंट होती है न। यहाँ तो चली आती है, जो जैसे कर्म करते हैं ऐसा उसका फल मिलता है। यह है रूहानी गवर्मेन्ट। रूह को सज़ा मिलती है। यहाँ तो स्थूल सज़ा मिलती है, वह फिर है गुप्त सज़ा। गर्भ में सज़ा भोगते हैं, फिर कहते हैं– हमें निकालो; परन्तु जेल वर्ल्ड(बर्ड) तो ..... कल्प बनना ही है। फिर आधा कल्प गर्भ महल में रहते हो। बाप कहते हैं, तुम बच्चों की मैं कितनी सर्विस करता हूँ, पतित दुनिया, पतित शरीर में आए। मुझे आना भी इसमें ही है, जिसका नाम ब्रह्मा रखा। ब्रह्मा सो श्री नारायण, सरस्वती सो लक्ष्मी। तत् त्वम् उनके बच्चे। तुम जानते हो हम माँ–बाप के तख्त पर जीत पहनने वाले हैं। एक/दो का वारिस बनते जाते हैं। पहले वाले फिर नीचे आते जाते हैं। तुम मात–पिता के तख्त पर जीत पाते हो। यहाँ फिर कहा जाता है माया पर जीत पहनो तो स्वर्ग के मालिक बनेंगे। पतित मनुष्य स्वर्ग का मालिक बनाए न सके। बाबा कहते हैं, ड्रामा में कल्प–2 मेरा ही पार्ट है। तुम जानते हो, अभी ड्रामा पूरा होना है। सतयुग की हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर से रिपीट करेंगे। हम सो देवी–देवता बनेंगे। तुम इस चक्कर को जानते हो। तुम्हारी तकदीर जगी हुई है। ज्ञान सूर्य तुम्हारी तकदीर जगाए रहे हैं। तकदीर पर लकीर लगाते हैं देह–अभिमान। मूल बात है देही–अभिमानी बनो, बाप को याद करो, अपन को आत्मा समझो। कितनी सहज बात है। सन्यासी लोग तो कह देते परमात्मा बेअंत है। वह भी एक खेल है, जो मनुष्य कहने लग पड़ते कि बाप बेअंत है। बाप को नहीं जानते हो, बेअंत क्यों कहते हो? यह चक्र तो 5000 वर्ष का है न। माया को बेअंत नहीं कहेंगे, रचना को बेअंत कह देते हैं। लाखों वर्ष का चक्र कह देते। तुम तो जानते हो, 5000 वर्ष की बात है। मूल बात बाबा समझाते हैं, देही–अभिमानी बनाते रहो। समझाना है, भगवान तो एक है न, जिसको भक्त याद करते हैं। भक्त ही भगवान होते तो याद किसको करेंगे! भक्ति अथवा साधना करते हैं भगवान की। कहते हैं, ज्योति ज्योत समावेंगे; परन्तु निर्वाणधाम का मालिक तो चाहिए ना। ऐसे नहीं, ब्रह्म ही भगवान है। बाप कहते हैं यह तुम्हारा ब्रह्म भ्रम है। मैं तो ब्रह्म का रहने वाला स्टार हूँ। बाप कहते हैं, यह सन्यासी आदि कोई भी तुमको राइटियस नहीं सुनाते। राइटियस ही राइट बात बताते हैं। परमात्मा स्टार है। जैसे आत्मा में 84 जन्मों का

अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, यह कब विनाश नहीं हो सकता। बाप कहते हैं– मैं आत्मा भी इस ड्रामे के बंधन में है(हूँ)। ऐसे नहीं, पत्ते मेरे हुक्म से हिलते हैं। यह ड्रामा की बात है। जो सेकेण्ड पास हुआ वह फिर हूबहू रिपीट होगा। जैसे शूटिंग में मच्छर का उड़ना–बैठना आदि सब शूट हो जाता है न। यह सब धारणा करनी है तब तो स्वदर्शनचक्रधारी समझेंगे। कितनी सहज बात है! कहते भी हैं– बाबा, बरोबर हम राजाओं का राजा बनते हैं। कोई कहते हैं– बाबा, मैं एक मास का बच्चा हूँ। एक मास में निश्चय हो गया तो फिर बाप पास भागना चाहिए– जीते जी गोद तो ले लेवे, रिजर्व तो कर ले। गोद न ली और हार्टफेल हो जाए, तो वर्सा पा न सके। माँ–बाप की गोद में तो आना है न। मात–पिता पास आना पड़े। मम्मा की भी यह (ब्रह्मा) बड़ी मम्मी है न। डाडी–डाडे से वर्सा मिलता है। यह बड़ी वण्डरफुल बातें हैं, जो बाप बिगर कोई समझा न सके। तुम हो मोस्ट बिलवेड चिल्ड्रेन। बहुत बड़ी बिरादरी के हो न! सन्यासियों का झाड़ निकाल निकालेंगे तो पहले है शंकराचार्य। यह फिर पहले है ब्राह्मणों की चोटी। विराट रूप में देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र दिखाते हैं। शिवबाबा को गुम कर दिया है। गवर्मेन्ट की त्रिमूर्ति में भी शिव को उड़ा दिया है। चित्र है; परन्तु जानते नहीं तो काम में नहीं आते। बाबा घड़ी–2 कहते हैं, देही–अभिमानी भव, तो फिर तुम्हारा खाता जमा होता रहेगा। देही–अभिमानी न होंगे तो घाटा पड़ेगा। देही–अभिमानी होने से तुम किसको दुख नहीं देंगे। देह–अभिमानी होने में दुख देंगे, जमा न होगा। मूल बात समझाते हैं, निरंतर मीठे–2 बाप को याद करते रहो, किसको भी दुख न दो। बाप आते ही हैं सबको बहुत मीठा बनाने। देखते हो, शिवबाबा कितना मीठा है। शिवबाबा बैठ शिक्षा देते हैं। वह भी निराकार कितना निरहंकारी है! कैसे आकर पढ़ाते हैं, सर्विस करते हैं। बच्चों को खुश करना सिखलाते हैं– ऐसे प्यार रखो। किसी की इन्सल्ट मत करो। देह–अभिमानी इन्सल्ट करते हैं। पहला नम्बर इन्सल्ट है काम–कटारी की। क्रिमिनल एसाल्ट का तो कब ख्याल भी न आए। माया क्रिमिनल एसाल्ट में धकेल देती है। बाबा का बनते हैं तो माया और ही जास्ती तूफान में लाती है। संकल्प–विकल्प में तुमको हिलना न है। बाप को छोड़ना नहीं। तंग होकर कब फारकती न देना। ख्याल भी न आना चाहिए। बाप को याद करते रहो, आप समान बनाते रहो, तो बहुत जमा होता रहेगा। बहुतों को जी दान दिलाओ। काल के चम्बे से छुड़ाओ। तुम काल के ऊपर जीत पहन रहे हो। अभी तुम सन्मुख बैठे हो। सन्मुख का मज़ा होता है; परन्तु फिर सर्विस कर औरों को भी आप समान बनाना है। भारत का बेड़ा पार करना है। अगर बाप को फारकती दिया तो स्वर्ग का वर्सा मुट्ठी से उड़ जावेगा। मुट्ठी में पकड़ते रहना है, तकदीर का फूल कहें। जानते हो अब 84 जन्म पूरे हुए, अब चले सुखधाम हम वाया शांतिधाम, फिर आएँगे राज्य करने। अच्छा, मीठे–2 बापदादा, मीठी–2 मम्मा का अति लकी स्टार्स, सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ

सर्व दैवी भाई–बहनों को मधुबन स्वर्गाश्रम से सुन्दर लाल टीचर की हार्दिक याद स्वीकार हो। समाचार यह है कि मैंने अपना अनुभव अलौकिक परिवर्तन के नाम से छपवाया है। यह 16 पृष्ठ की पुस्तिका है और इसकी कीमत केवल 5 नए पैसे रखी गई है। जिस सेन्टर को जितनी कॉपीज़ की आवश्यकता हो वह दिल्ली में 28/142, वेस्ट पटेल नगर से या करोलबाग सेन्टर से मँगवा सकता है।